



DR. ANIL PRAKASH JOSHI

Dr. Anil Prakash Joshi, Founder of Himalayan Environmental Studies and Conservation Organization (HESCO), is known for his contribution of social upliftment of rural community. HESCO has been working for rural community which helps them to tap local resources to meet their local needs and achieve economically sustainable development. He has been working from past 36 years towards evolving new paradigm to restore balance between economic interest and an ecological imperative with due regards to maintain Himalayan sustainability through several padyatras and cycle yatras. His ideology of Local Need, Meet Locally and Resource Based Development became popular across the Himalayan belt and other parts of the country as he integrated wisdom with technology.

2. Born on 6th April, 1955 in a middle class family, in a small town of Kotdwar, Uttarakhand. Dr. Joshi pursued his M.Sc. and Ph.D. in Botany and later became a lecturer/reader in Kotdwar Degree College. Since beginning, his training has been on ecological issues. His commitment towards social work was so strong that he left his prestigious job for the welfare of the society in 1992.

3. Dr. Joshi established Community Research Centre (Vigyan Gram) to develop innovative technologies with community participation for Himalayas. This Centre immediately became popular within community, research institutes, planners and policy makers. It is currently associated with hundreds of civil societies and research institutes for social upliftment of under privileged communities. His integrated and inclusive approach for village development in different agro-climatic zones has drawn massive attention. He promoted Schedule Caste/Schedule tribe Community on the concept of Ideal village by utilizing their local skill and resources and was adopted as National Program. He upgraded rural artisans for their productive return through Tool Rooms. He motivated various shrines especially Vaishno Devi, Badrinath, Kedarnath, Yamunotri, Gangotri, where offerings (Prasad) made from local grains and promoted both local crops and economy and brought new avenues of employment for local women groups, it was launched at National level too through S&T Ministry. Similarly, rejuvenation of drying water springs and streams added life in the mountain region. Dr. Joshi was able to recharge the springs/streams through simple technology by identifying recharge zone and their treatment. He treated such zones with water holes and ponds. This rejuvenated water to spring and streams and natural rejuvenation of forest. This work then spread to various States in the Country especially in J&K, Himanchal Pradesh and Uttar Pradesh. The same has been adopted by Forest Department in various locations for preventing Forest fire.

4. In Order to offer tribute to Himalayas, Dr. Joshi has initiated celebration of Himalayan Day on September 9th since 2010. This day has also been accepted and declared by the State Government of Uttarakhand as Himalayan Day. His effort to bring Gross Environmental Product (GEP) as Ecological Growth Measures of the state has been accepted by High Court in 2015. Government of Uttarakhand is following high court verdict and working on GEP as an Ecological Growth Measure for the state. This issue has generated discussion in the interest of ecosystem growth of the country. He has been regularly writing environment related editorials for various newspapers and his article have initiated awareness in masses.

5. Dr. Joshi has received several awards and honours including Padma Shri in 2006; Jamnalal Bajaj award in 2006; Honored as one of the Silvers of the Year 2007, Achievers named by Harmony Magazine; Real Heroes Award, CNN-IBN,2008; National Award for Women's Development Through Application of Science and Technology, 2009; Heroes of Hopes by Times of India, 2010; Biotechnology Social Development award, 2016; Award for Excellence in Public Service in 2018 from Indian Institute of Public Administration etc.





डॉ. अनिल प्रकाश जोशी

डॉ. अनिल प्रकाश जोशी, हिमालयन एनवायरमेंटल स्टडीज एंड कंजरवेशन ऑर्गनाइजेशन (हेस्को) के संस्थापक हैं और उन्हें ग्रामीण समुदाय के सामाजिक उत्थान में योगदान के लिए जाना जाता है। हेस्को ग्रामीण समुदाय के लिए काम कर रहा है और स्थानीय जरूरतों को पूरा करने और आर्थिक रूप से स्थायी विकास हासिल करने के लिए स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करने में उनकी मदद करता है। वह पिछले 36 वर्ष से अनेक पदयात्राओं और साइकिल यात्राओं के माध्यम से हिमालय के अस्तित्व के लिए आर्थिक हितों और पारिस्थितिक अनिवार्यता के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए नए प्रतिमान विकसित करने की दिशा में काम कर रहे हैं। स्थानीय जरूरत को, स्थानीय तौर पर पूरा करने और संसाधन आधारित विकास की उनकी विचारधारा हिमालय पट्टी और देश के अन्य हिस्सों में लोकप्रिय हो गई और इसका कारण यह था कि उन्होंने ज्ञान को प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ा है।

2. उत्तराखंड के कोटद्वार के एक छोटे से कस्बे में एक मध्यमवर्गीय परिवार में, 6 अप्रैल, 1955 को को जन्मे डॉ. जोशी ने वनस्पति विज्ञान में एमएससी और पीएच.डी की और बाद में वह कोटद्वार डिग्री कॉलेज में लेक्चरर/रीडर बन गए। वह शुरू से ही पारिस्थितिक मुद्दों का प्रशिक्षण प्राप्त करते रहे। सामाजिक कार्यों के प्रति उनकी लगन इतनी गहरी थी कि उन्होंने 1992 में समाज की भलाई के लिए अपनी प्रतिष्ठित नौकरी छोड़ दी।

3. डॉ. जोशी ने सामुदायिक भागीदारी से हिमालय के लिए नवीन प्रौद्योगिकियां विकसित करने के लिए सामुदायिक अनुसंधान केंद्र (विज्ञान ग्राम) की स्थापना की। यह केंद्र समुदाय, अनुसंधान संस्थानों, योजनाकारों और नीति निर्माताओं के बीच तुरंत लोकप्रिय हो गया। यह वर्तमान में पिछड़े समुदायों के सामाजिक उत्थान के लिए सैकड़ों नागरिक समाज और अनुसंधान संस्थानों से जुड़ा हुआ है। विभिन्न कृषि–जलवायु क्षेत्रों में ग्राम विकास के प्रति उनके एकीकृत और समावेशी दृष्टिकोण ने काफी ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने आदर्श गांव की अवधारणा पर स्थानीय कौशल और संसाधनों का प्रयोग करके अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदाय को प्रोत्साहन दिया और उनके इस प्रयोग को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में अपनाया गया। उन्होंने टूल रूम के माध्यम से ग्रामीण शिल्पकारों के लाभ के लिए उनके शिल्प को उन्नत बनाया। उन्होंने विभिन्न धार्मिक स्थलों, विशेष रूप से वैष्णो देवी, बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री में स्थानीय खाद्यान्न से प्रसाद तैयार करने को प्रोत्साहन दिया। इससे वहां स्थानीय फसलों और अर्थव्यवस्था दोनों को बढ़ावा मिला और स्थानीय महिला समूहों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा हुए, इसे राष्ट्रीय स्तर पर भी विज्ञान और प्रौद्यागिकी मंत्रालय के द्वारा लागू किया गया। इसी तरह सूख चुके जलस्रोतों और नदियों के जलप्रवाह से पर्वतीय क्षेत्र में नए जीवन का संचार हुआ। डॉ. जोशी ने जल पुनर्भरण क्षेत्रों की पहचान करके और सरल तकनीक के जरिए इन जलस्रोतों/नदियों का पुनर्भरण किया। उन्होंने जल छिद्रों और तालाबों के द्वारा इन क्षेत्रों का प्रबंधन किया। इससे झरनों और नदियों में पानी आ गया और वनों का प्राकृतिक रूप से कायाकल्प हो गया। इसके बाद, इस प्रक्रिया का प्रयोग विभिन्न राज्यों में विशेष रूप से जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश में किया जाने लगा। वन विभाग द्वारा विभिन्न स्थानों पर जंगल की आग को रोकने के लिए इस तकनीक को अपनाया गया है।

4. हिमालय के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए डॉ. जोशी ने 2010 से प्रत्येक वर्ष 9 सितम्बर को हिमालय दिवस मनाने की शुरुआत की है। उत्तराखंड राज्य सरकार ने भी इस दिन को हिमालय दिवस घोषित कर दिया है। सकल पर्यावरण उत्पाद (जीईपी) को राज्य के पारिस्थितिक विकास उपायों के रूप में अपनाने के उनके प्रयास को उच्च न्यायालय ने 2015 में स्वीकार किया है। उत्तराखंड सरकार उच्च न्यायालय के फैसले का पालन कर रही है और राज्य के लिए पारिस्थितिक विकास उपाय के रूप में जीईपी पर काम कर रही है। इस मुद्दे ने देश के पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के हित में चर्चा की शुरुआत कर दी है। वह नियमित रूप से विभिन्न समाचार पत्रों के लिए पर्यावरण से संबंधित संपादकीय लेख लिख रहे हैं और उनके लेखों ने आम जनता में जागरूकता पैदा की है।

5. डॉ. जोशी को 2006 में पद्मश्री सहित कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं जिनमें 2006 में जमनालाल बजाज पुरस्कार; वर्ष 2007 के सिल्वर्स के रूप में सम्मान, हारमनी पत्रिका द्वारा अचीवर्स के रूप में नामांकन; रियल हीरोज अवार्ड, सीएनएन–आईबीएन, 2008; विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रयोग के माध्यम से महिला विकास के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, 2009; टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा हीरोज ऑफ होप्स, 2010; जैव प्रौद्योगिकी समाज विकास पुरस्कार, 2016; भारतीय लोक प्रशासन संस्थान से 2018 में उत्कृष्ट लोक सेवा पुरस्कार आदि शामिल हैं।